प्रकाशनार्थ

पटना, 27 सितम्बर। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीच्यूट (आद्री) द्वारा आज 'इम्पीरियल गेम्स इन तिब्बत' विषय पर आयोजित पुस्तक चर्चा में पूर्व भारतीय विदेश सेवा अधिकारी और आद्री के वर्तमान अध्यक्ष तथा इस पुस्तक के लेखक श्री दिलीप सिन्हा ने पुरानी यादों को ताजा करते हुए कहा कि लगभग दो हजार वर्षों तक तिब्बत भारत का सबसे शांतिपूर्ण पड़ोसी रहा था। तिब्बती लोग नालंदा और विक्रमशिला जैसे भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने आते थे और भारत का सम्मान करते थे। दुर्भाग्य से भारत के लिए 1950 के बाद से इस संकटग्रस्त क्षेत्र पर चीन का कब्जा हमारे लिए सबसे बड़ा सुरक्षा खतरा बन गया है।

दुनिया द्वारा तिब्बत को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता न देने के कारणों की जांच-पड़ताल करते हुए श्री सिन्हा ने 18वीं शताब्दी में ग्रेट ब्रिटेन, रूस और चीन के बीच खेले गए ग्रेट गेम के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे ब्रिटेन ने चीन (तिब्बत सहित) को अक्षुण्ण रखने में मदद की क्योंकि उसे डर था कि यदि चीन टुकड़ों में बंट जाएगा तो रूस को ब्रिटिश-शासित भारतीय साम्राज्य को निगलने में मदद मिलेगा। यहां तक कि तिब्बत को चीन के अधीन रखने के लिए ब्रिटेन ने 1907 में एंग्लो-रूसी समझौता भी तैयार किया। यह स्थिति निरंतर अब तक चलती रही है। हालांकि श्री सिन्हा भविष्य को लेकर आशावादी हैं क्योंकि अधिकांश तिब्बती युवा एक स्वतंत्र तिब्बत देखना चाहते हैं।

मुख्य अतिथि पटना विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर युवराज देव प्रसाद ने पुस्तक लिखते समय आर्काइवल और सेकन्डरी स्रोतों का बड़े पैमाने पर उपयोग करने के लिए लेखक की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह कुछ ऐसा है जो इतिहासकारों द्वारा शायद ही कभी किया जाता है। प्रो. प्रसाद को इस बात पर अफसोस है कि तिब्बतियों को दुनिया ने पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया है।

इससे पहले आद्री के निदेशक प्रोफेसर अजीत सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत किया और सदस्य-सचिव डा. अस्मिता गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में विशिष्ट प्रतिभागियों में श्री अभयानंद, पूर्व डीजीपी, श्री त्रिपुरारी शरण, मुख्य सूचना आयुक्त, श्री के एन रॉय, श्री ए एम प्रसाद, प्रो. पद्मलता ठाकुर, प्रो मीना सिन्हा, आद्री की डा. उषाषी गुप्ता और डा. सुनीता लाल उपस्थित थीं।

(अंजनी कुमार वर्मा)